B - III
L - 32
MIH

असहयोग आन्दोलन (Dec. 1920 - Feb 1922)

- तात्कालिक कारण था रॉलेट एक्ट, जालियांवाला बाग हत्याकांड एवं खिलाफत के मुद्दे को लेकर असंतोष।
- हालाँकि इसकी पृष्ठभूमि लम्बे समय से निर्मित हो रही थी· 1909 के अधिनियम से असंतोष था और मांटेग्यू घोषणा के बावजूद 1919 के अधिनियम में राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुकूल संवैधानिक सुधारों को महत्व नहीं दिया गया अत: इसको लेकर भी असंतोष था।
- राष्ट्रीय आन्दोलन का कठोरता पूर्वक दमन एवं दमन के लिए बनाए गए कानूनों को लेकर भी लोगों में आक्रोश था।
- विभिन्न कारणों से मुस्लिम समुदाय में भी असंतोष था।
- युद्ध के कारण मंहगाई में वृद्धि के कारण भी लोग नाराज थे।
- गरम एवं नरम दल के विलय, कांग्रेस मुस्लिम लीग पैक्ट, होमरूल आन्दोलन

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

इत्यादि से राजनीतिक कार्यकर्ताओं में उत्साह तो था लेकिन अब तक सरकार पर किसी भी आन्दोलन के द्वारा प्रभावी तरीके से दबाव निर्मित नहीं किया जा सका था।

कैसर-ए-हिन्द (दक्षिण अफ्रीका में)

बोअर युद्ध (1899-1900 ई० में)

विशेषताएँ:-

- क्षेत्रीय प्रसार के दृष्टिकोण से इस आन्दोलन को देखें तो न केवल अखिल भारतीय स्तर पर शहरों में इस आन्दोलन का प्रसार हुआ बल्कि बड़े पैमाने पर ग्रामीण भारत में भी इसका प्रसार रहा।
- आन्दोलन का प्रभाव रियासतों पर भी दिखा और कुछ रियासतों में भी लोकतांत्रिक अधिकारों की माँग की जाने लगी।
- स्वदेशी आन्दोलन की तुलना में छात्रों, महिलाओं एवं मजदूरों की व्यापक भागीदारी रही इस आन्दोलन में।
- सामाजिक आधार का एक विशिष्ट पहलू था बड़ी संख्या में किसानों एवं मुस्लिम समुदाय की भागीदारी।

Scanned by CamScanner

- भारतीय पूंजीपतियों के एक बड़े वर्ग ने भी आन्दोलन को समर्थन दिया साथ ही आंध्र-प्रदेश महाराष्ट्र, कर्नाटक इत्यादि क्षेत्रों में जनजातीय समाज की भागीदारी आन्दोलन में दिखी।

Note:- कुछ पूंजीपतियों ने असहयोग आन्दोलन विरोध समिति बनाई जैसे पुरुषोत्तमदास, फिरोज सेठना इत्यादि।

- आन्दोलन का लक्ष्य स्वराज की प्राप्ति निर्धारित किया गया हालांकि इसे परिभाषित नहीं किया गया।

- पूर्ववर्ती आन्दोलन की तुलना में यह अधिक संगठित था जैसे - एक निश्चित लक्ष्य, कार्यक्रम, अहिंसात्मक तरीके से संघर्ष, एक मजबूत संगठनात्मक ढांचा, आन्दोलन को प्रारंभ एवं वापस लिए जाने की घोषणा इत्यादि इस तथ्य को प्रमाणित करती है।

Note:- आन्दोलन से पूर्व सरकार से बातचीत तथा आन्दोलन के दौरान निर्धारित कार्यक्रम के अतिरिक्त आवश्यकता अनुसार किसी मुद्दे को शामिल करना, नए-नए लक्ष्यों का निर्धारण करना इत्यादि भी

Scanned by CamScanner

गाँधी-वादी रणनीति का भाग होता था।
(उपरोक्त विशेषताओं के साथ-साथ।)

- आन्दोलन को प्रत्येक स्थिति में अहिंसात्मक रखने पर बल था। अहिंसा को लेकर गांधी जी की व्यक्तिगत आस्था तो थी साथ-साथ यह कुशल रणनीति का भी एक भाग था। अहिंसात्मक आन्दोलन का यदि सरकार दमन करती है तो इससे सरकार की छवि खराब होगी और यदि नहीं करती है तो लोगों की भागीदारी बढ़ेगी और लोगों में यह संदेश जाएगा कि सरकार या कांग्रेस गांधी जी से डर गयी है यह भी सरकार के लिए ठीक नहीं था।

- असहयोग आन्दोलन के विरोधात्मक कार्यक्रम स्वदेशी आन्दोलन के समान ही था हालाँकि इस आन्दोलन को प्रत्येक स्थिति में अहिंसात्मक रखने पर बल दिया गया।

- इसरी तरफ रचनात्मक कार्यों के पीछे एक दूर दृष्टि थी इससे सामाजिक एकता, आत्मनिर्भरता जैसे तत्वों को बढ़ता मिलता साथ ही आन्दोलन को निरंतरता भी क्योंकि आन्दोलन के पश्चात भी इसे जारी करने की योजना थी।

Scanned by CamScanner

- जन आन्दोलन की सीमाएं, सरकार की दमनकारी नीति तथा चौरीचौरा की घटना के पश्चात गांधी जी ने आन्दोलन वापस लेने की घोषणा की। आन्दोलन समाप्त होने के बावजूद राष्ट्रीय आन्दोलन को इसने नई ऊंचाईयों पर पहुंचाया।

Note :-

आन्दोलन के दौरान कई शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना हुई जैसे- काशी, बिहार एवं गुजरात विद्यापीठ।

- कई महत्वपूर्ण नेताओं ने वकालत छोड़ दी जैसे राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालाचारी इत्यादि।
- ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार आंशिक सफल रहा
- आन्दोलन के दौरान जिन्ना, एनीबेसेंट, विपिन चन्द्रपाल इत्यादि नेताओं ने कांग्रेस छोड़ दी।
- आन्दोलन के समानांतर कई क्षेत्रीय मुद्दों को लेकर भी आन्दोलन चला। पंजाब में अकाली आन्दोलन, बिहार में ताड़ी ~~की~~ दुकानों पर धरना, केरल में मोपला किसानों का संघर्ष इत्यादि।

Scanned by CamScanner

- आन्दोलन के दौरान ही कुछ नए लक्ष्य निर्धारित किए गए जैसे तिलक स्वराज फंड के लिए 1 करोड़ रूपये जमा करना। चरखा वितरण सदस्यता अभियान इत्यादि।
- 1921 में मालवीय जी के प्रयासों से वायसराय रीडिंग एवं गांधी जी के बीच वार्ता हुई। लेकिन बातचीत सफल नहीं रही।
- 5 फरवरी 1922 को चौरीचौरा घटनाक्रम के पश्चात गांधी जी ने आन्दोलन वापस लेने की घोषणा की।
- 12 फरवरी 1922 को बारदोली में CWC की बैठक बुलाई गई और बारदोली प्रस्ताव पारित किया गया तथा आन्दोलन को वापस लिया गया।

प्रश्न- स्वदेशी एवं असहयोग आन्दोलन की तुलना करें

प्रश्न- असहयोग आन्दोलन स्वदेशी आन्दोलन से किन अर्थों में विभिन्न था।

प्रश्न असहयोग आन्दोलन स्वदेशी आन्दोलन का अगला चरण था।

प्रश्न असहयोग आन्दोलन की मुख्य विशेषताओं को संक्षेप में बताएँ। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में असहयोग आन्दोलन के योगदान को बताएं।

Scanned by CamScanner

संवैधानिक विकास का दूसरा चरण (1892, 1909, 1919)

भारत परिषद अधिनियम - 1892 :

- वायसराय परिषद में एक और स्थायी सदस्य शामिल किया गया (1+6)
- अतिरिक्त सदस्यों की संख्या न्यूनतम 10 और अधिकतम 16 होंगी।
- इनमें कुछ सदस्यों का अप्रत्यक्ष तरीके से निर्वाचन होगा। (पहली बार निर्वाचन का प्रावधान)
- अतिरिक्त सदस्यों को कुछ अधिकार भी दिए गए जैसे सार्वजनिक हित से जुड़े मुद्दे पर प्रश्न पूछने का अधिकार, बजट पर चर्चा का अधिकार।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner